# परियोजना ने बदली जिंदगी

किसान का नाम - कैलाश, पिता का नाम -बाबरा

ग्राम - मुन्द्री, ग्राम पंचायत - मुन्द्री , पंचायत समिति - आनन्दपुरी, बाँसवाड़ा

श्री कैलाश  पिता बाबरा निवासी गाव - मुन्द्री , ग्राम पंचायत - मुन्द्री, पंचायत समिति - आनन्दपुरी , जिला - बाँसवाड़ा (राजस्थान) का रहने वाला है कैलाश की उम्र 50 वर्ष है , परिवार में 2 शादीशुदा  सहित 5 लडके ,1 लड़की सहित कुल 10 सदस्य है , परिवार के पास 10 बीगा जमीन तथा 01 कुआ हैं |

श्री कैलाश ने बताया कि वर्ष 2011 तक अपने पुरे परिवार बाल-बच्चो सहित  अहमदाबाद में मजदूरी करने चला जाता था , मै गुजरात में बड़े किसानो के कृषि कार्य करता व बच्चे भी मेरे साथ कम करते , अच्छा पैसा मिलाता था | होली - दिवाली, कोई सामाजिक कार्यक्रम या शादी - विवाह होता था तब घर आना होता था , बारिश आने पर खेतो में बुवाई कर चले जाते और फसल तैयार होने पर घर आते थे | इस फसल से पुरे वर्ष खाने लायक अनाज की पूर्ति हो जाती थी , रबी की फसल न के बराबर बुवाई होती थी |

वर्ष 2011 में जब में खरीफ की फसल बुवाई हेतु घर आया तब मैंने देखा की हमारे गाँव में

नाबार्ड के सहयोग से वाग्धारा संस्था द्वारा खेतो में आम , अमरुद ,निम्बू की वाड़ी  लगाई जा रही थी , मैंने गुजरात में फल के बगीचे देखे थे | इसी बीच वाड़ी कार्यक्रम द्वारा गाँव में मीटिंग का आयोजन किया गया में भी सुनने चला गया, सुन कर लगा की मै भी वाड़ी लगा सकता हूँ | वर्ष 2012 में मई माह में मैंने मेरे पडत जमीन में वाड़ी का कार्य चालू किया , शैक्षणिक भ्रमण पर गया | परियोजना से मुझे खड्डे भरने का खाद ,बीज ,औजार व वाड़ी में जो भी कार्य किया उसका समय पर मुझे सहयोग नगद के रूप में मिला | मेने गुजरात जाने का मन त्याग दिया और

निश्चय किया कि मै घर रहूगा व अपनी खेती करूँगा | परियोजना से मुझे समय - समय पर प्रशिक्षण मिलाता रहा | मेरे पास अपना कुआ था जमीन थी लेकिन पानी निकलने हेतु संसाधन नहीं था तो मेने बचत राशी से एक इन्जन खरीद लिया पर पाइप नहीं होने की वजह से में वाड़ी व अन्य खेतो में पानी नहीं पिला पा रहा था , इस पर मेने बैठक में बताया की मेरे पास पाइप की कमी है , मुझे परियोजना की मदद से 130 फिट पाइप मिले , इससे मुझे वाड़ी व खेतो में सिंचाई करने में मदद मिली | मुझे परियोजना की तरफ से सब्जी का बीज मिला , मेने 6000 रु. की सब्जी बेची, जो  खेत पडत थे उनमे 1300 किलोग्राम गेहू का अतिरिक्त उत्पादन हुआ , रबी में मक्का ,चना भी बुवाई की और अच्छा उत्पादन हुआ | आज कल में जायद की फसल मुंग की बुवाई भी करने लगा हूँ , मुझे अच्छे  उत्पादन की आस है | आज में अपने परिवार के साथ घर पर रहता हूँ , समाज में जाता हूँ , मेरे बच्चे स्कूल जा रहे है और राह निकलते लोग वाड़ी देखकर मेरे घर आते है , मै गर्व का अनुभव करता हूँ | सच कहू तो वाड़ी ने मेरी दुनिया ही बदल दी |

**वाग्धारा - नाबार्ड टी डी एफ वाड़ी विकास परियोजना आनन्दपुरी - 2**

**Case Study - 02**

किसान का नाम - श्री मक्सी भाभोर , पिता का नाम - धुलिया भाभोर

ग्राम - मुन्द्री , ग्राम पंचायत - मुन्द्री , पंचायत समिति - आनन्दपुरी , बाँसवाड़ा (राज.)

श्री मक्सी पिता धुलिया भाभोर निवासी ग्राम - मुन्द्री , ग्राम पंचायत - मुन्द्री का रहने वाला है |

श्री मक्सी भाई के परिवार में पत्नी , बेटा , पुत्रवधू , पौत्र, पौत्रिया सहित कुल 11 सदस्य है , संसाधन के नाम पर एक कुआ व 15 बीगा जमीन हैं , पूरा परिवार गुजरात में मकान बनाने के काम पर जाता है , अच्छे पैसे मिलते हैं लड़का फूलचंद मिस्त्री हैं , 05 वर्ष पूर्व मक्सी भाई का छोटा बेटा ऊँची बिल्डिंग पर कम कर रहा था ,गिराने से मृतु हो गई , उसकी पत्नी 02 बच्चे व एक लड़का माँ के गर्भ में था | कुछ समय पश्चात् पुत्र वधु ने किसी और पुरुष से शादी कर ली | मक्सी भाई की जमीन में सिर्फ खरीफ की फसल का उत्तपादन होता था जो परिवार के खाने के लिए प्रयाप्त था, परिवार की आर्थिक स्थिति गुजरात की मजदूरी पर ही आश्रित थी |

वर्ष 2011 में मुन्द्री ग्राम में वाग्धारा संस्था द्वारा नाबार्ड के सहयोग से वाड़ी कार्यक्रम से मोहल्ले में 10 - 12 वाड़ी लगाई गई | मक्सी भाई ने बताया की मेरी भी इच्छा थी पर कुआ में प्रयाप्त पानी नहीं था सो मनमसोस कर रह गया , मेने मेरी पीड़ा परियोजना के अधिकारियो को बताई तो उन्होंने सरपंच से मिलाने एवम टी ए डी विभाग से कुआ गरिकरण की सलाह दी , कुछ समयप्रांत कुआ गहरा हो गया , कुआ में अच्छा पानी आया | अगले वर्ष मेने अपनी पत्नी के नाम से वाड़ी लगाई | वाड़ी लगाने के बाद मेने मोटर खरीदी और परियोजना की मदद से मुझे पाइप मिले , लेकिन अभी भी पाइप कम थे, सभी खेतो में सिंचाई नहीं हो पा रही थी , इस पर परियोजना अधिकारियो ने मेरा आवेदन हॉर्टिकल्चर विभाग में ड्रिप हेतु आवेदन करवाया |

आज मेरी वाड़ी तक व हर खेत तक पानी पहुचता है पाइप लाइन हो गई , अब में ड्रिप के पाइप से दुसरे पाइप जोड़ कर पूरे खेतो की सिचाई करता हूँ ,मैने पहले कभी भी रबी की फसल नहीं उगाई लेकिन दो साल से लगभग 40 क्विंटल प्रति वर्ष गेहू का उत्पादन ले रहा हूँ , रबी में मक्का की भी पैदावार हुई है ,

आज कल जायद की फसल में मूंग ,ग्वार,हरी घास के लिए ज्वार व घर के उपयोग हेतु सब्जी का उत्पादन ले रहा हूँ | वाड़ी में परियोजना की मदद से मेडबंदी करवाई गई एवम अरण्डी के 300 ग्राम बीज दिये जिसे मेने मेडबंदी के पाले पर लगाया 32 कि. ग्रा. उत्पादन हुआ ,02 कि . ग्रा . बीज हेतु रखा व 30 कि.ग्रा. बेचा ,इसे बेचने पर मुझे 1200 रु . का लाभ हुआ | अब बच्चे स्कूल जाते है , मकान बना रहा हूँ व कुआ बँधवाया | बच्चे आजकल खेतो में ही कार्य करते है परिवार के तीन सदस्य ही गुजरात जाते है , आज में खुश हूँ , इस वर्ष लड़के फूलचंद ने भी वाड़ी लगाई, मुझे लगता है की अब बच्चो को भविष्य में गुजरात जाने की जरुरत नहीं पड़ेगी |

धन्यवाद

वाग्धारा - नाबार्ड वाड़ी विकास परियोजना आनन्दपुरी -2